Tugend wird überall geehrt, das Geschlecht der Eltern ist ohne Nutzen: den Vischnu verehren die Menschen, den Vasudeva nicht. Sch.

857. Nâg. Nîti Çl. 150:

ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ཡོན་ཏན་ལ་དགའ་ཡི། །ཡོན་ཏན་མེད་པ་ཡོན་ཏན་གྱིས་མི་མགུ།

བུང་བ་ནགས་ནས་པདྨར་འོང་འགྱུར་གྱི། །སྦལ་པ་ལྷན་ཅིག་གནས་ཀྱང་དེ་ལྟ་མིན།།

Der Tugendhafte freut sich der Tugend, der Tugendlose wird durch Tugend nicht erfreut: die Biene kommt aus dem Walde zur Wasserrose, der Frosch aber nicht, obgleich er zusammen wohnt.

Var. Çl. 4:

ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ཡོན་ཏན་ལ་དགའ་ཞིང་། །ཡོན་ཏན་མེད་པ་ཡོན་ཏན་ལ་མི་དགའ།

ནགས་ཀྱི་ བུང་བ་ མཚོ་ཡི་ པདྨར་དགའ། །སྦལ་པ་ལྷན་ཅིག་གནས་ཀྱང་དེ་ལྟ་མིན།།

Der Tugendhafte freut sich der Tugend, der Tugendlose freut sich der Tugend nicht: des Waldes Biene freut sich an der Wasserrose des Sees, der Frosch, obwohl zusammenwohnend, thut es nicht.

Saskja Paṇḍita IV, Çl. 14 (= Spr. 68 Calc. u. 34 Fouc.):

ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ཡོན་ཏན་ལ། །དགའ་ཡི་ཡོན་ཏན་མེད་རྣམས་མིན།

སྦྲང་རྩི་འཇོན་པ་མེ་ཏོག་ལ། །དགའ་ཡི་ཤ་སྦྲང་དེ་ལྟར་མིན།།

Während sich der Tugendhafte an der Tugend erfreut, thun es die Tugendlosen nicht: während die Biene sich an der Blume erfreut, thut es die Bremse nicht. Sch.

858. *a.* **Lies** स्पृहणीयः.

873. Auch MBh. 5, 7074. Im ÇKDr. u. परित्याग **wird dieser Spruch ein** मत्स्यसूक्त **genannt. An beiden Orten** *d.* परित्यागो विधीयते.

875. Mas. II, Çl. 11:

མི་མངོན་འཁྲིག་དང་ཧམ་པ་དང་། །དུས་སུ་གནས་ནི་འཆའ་བ་དང་།

བག་ཡོད་པ་དང་ཡིད་མི་ཆེས། །འདི་ནི་བྱ་རོག་བསླབ་པ་ལྔ།།

Geheimen Beischlaf, Begierde, das Nisten zu rechter Zeit, Wachsamkeit und Misstrauen, diese fünf Dinge lerne man von der Krähe. Sch.

876. Vgl. Spruch 1208 und Pañkat. I, 335.

902. Lies in der Uebersetzung ***da zeigte er sich gleichgültig gegen ihre Gunst*** **st.** ***da verzweifelte er an ihrer Aussöhnung.***